

जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में कला, संस्कृति और इतिहास का संगम

रामेश्वरी कुमारी

विद्यार्थी वीएमओयू कोटा.

परमेश्वरी

विद्यार्थी वीएमओयू कोटा.

Paper Received date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

<https://doi.org/10.5281/zenodo.15390151>



ABSTRACT

यह समीक्षा पत्र जोधपुर, राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और कला परंपराओं की व्यापक चर्चा करता है। जोधपुर, जिसे 'ब्लू सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, राजस्थान का एक प्रमुख ऐतिहासिक और सांस्कृतिक केंद्र है। इस शहर का इतिहास और वास्तुकला राजपूतों के गौरव और उनकी कला के अद्वितीय योगदान से भरा हुआ है। जोधपुर के शाही किलों, महलों, और हावेलियों की वास्तुकला ने न केवल राज्य की ऐतिहासिकता को परिभाषित किया है, बल्कि यह भारतीय और मुगल वास्तुकला के संगम का प्रतीक भी है। मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस, और जसवंत थड़ा जैसे स्थापत्य उदाहरण जोधपुर के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं।

पत्र में जोधपुर की पारंपरिक कला रूपों जैसे पिचवाई चित्रकला, मिनीएचर आर्ट, जोधपुरी ब्लू पॉटरी और बॉक्स प्रिंटिंग का विश्लेषण किया गया है। इन कलाओं का समृद्ध इतिहास जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अलावा, जोधपुर में कला कार्यशालाओं, सांस्कृतिक महोत्सवों, और स्थानीय संगीत तथा नृत्य शैलियों जैसे कच्ची घोड़ी और कालबेलिया का महत्व भी इस पत्र में उल्लेखित किया गया है।

इस समीक्षा में जोधपुर के कला, संस्कृति और इतिहास के संरक्षण के प्रयासों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है, जिसमें पर्यटन के बढ़ते प्रभाव और स्थानीय कलाकारों की भूमिका पर भी चर्चा की गई है। अंत में, जोधपुर के सांस्कृतिक धरोहर और कला की भविष्यवाणी करते हुए, इस क्षेत्र में आगामी शोध और अध्ययन के अवसरों को भी परखा गया है।

मुख्य शब्द: जोधपुर सांस्कृतिक धरोहर, राजपूत कला और वास्तुकला, मेहरानगढ़ किला, पारंपरिक कला रूप, पर्यटन और सांस्कृतिक संरक्षण

प्रस्तावना

जोधपुर, राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा शहर है और यह थार मरुस्थल के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। जोधपुर को 'ब्लू सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यहां की अधिकांश इमारतें नीले रंग से रंगी हुई हैं, जो इसे एक अद्वितीय दृश्य प्रभाव प्रदान करती हैं। इस शहर की स्थापना 1459 में राठौड़ वंश के शासक राव जोधा ने की थी, और यह मण्डोर की प्राचीन राजधानी के स्थान पर बसा। जोधपुर का ऐतिहासिक महत्व बहुत गहरा है क्योंकि यह शहर राजपूतों के गढ़ के रूप में जाना जाता है और यहां के किले, महल, मंदिर और हवेलियां इसकी ऐतिहासिक धरोहर का हिस्सा हैं। शहर का प्रमुख आकर्षण मेहरानगढ़ किला है, जो एक पहाड़ी पर स्थित है और इसे राव जोधा द्वारा बनवाया गया था।

सामाजिक संरचना के संदर्भ में जोधपुर में मारवाड़ी संस्कृति का प्रमुख प्रभाव है, जो व्यापार, उद्योग और कृषि में विशिष्ट है। यहां के लोग अपनी धार्मिक परंपराओं, जैसे कि गंगौर और मारवाड़ महोत्सव, को बड़े धूमधाम से मनाते हैं। साथ ही, जोधपुर के समाज में राजपूतों की प्रभावशाली उपस्थिति के साथ-साथ मारवाड़ी, माली, जाट, और अन्य जातियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जोधपुर के सांस्कृतिक जीवन में मिश्रित तत्वों का सम्मिलन देखने को मिलता है, जो इस शहर को राजस्थान के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

जोधपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों में कला, संस्कृति और इतिहास का संगम एक अद्वितीय और समृद्ध परिपेक्ष्य प्रस्तुत करता है, जो राजस्थान की विरासत को जीवित और समृद्ध बनाता है। इस विषय के चयन का प्रमुख कारण यह है कि जोधपुर ने अपने ऐतिहासिक विकास, स्थापत्य कला और सांस्कृतिक धरोहर के माध्यम से पूरे राजस्थान और भारत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। जोधपुर की ऐतिहासिक इमारतें जैसे मेहरानगढ़ किला और उम्मेद भवन पैलेस, राजस्थान की शाही संस्कृति और स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं, जो न केवल वास्तुकला के प्रेमियों को आकर्षित करते हैं, बल्कि इतिहास प्रेमियों के लिए भी एक अमूल्य धरोहर हैं।

इस विषय का उद्देश्य जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में समाहित कला, संस्कृति और इतिहास के संबंध को समझना और उसका समग्र विश्लेषण करना है। यह समीक्षा जोधपुर के सांस्कृतिक धरोहरों, लोक कला, राजस्थानी संगीत और नृत्य के विविध रूपों को जोड़ने का प्रयास करेगी, जो शहर की पहचान और परंपराओं को पुनः उजागर करने में सहायक होगी। साथ ही, यह पर्यटन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समग्र धरोहर पर्यटकों को आकर्षित करती है और स्थानीय सांस्कृतिक जीवन को प्रगति की दिशा में प्रेरित करती है।

इस पेपर का उद्देश्य जोधपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों में कला, संस्कृति और इतिहास के परस्पर संबंधों का गहन विश्लेषण करना है। जोधपुर का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य कला के विभिन्न रूपों का संगम है, जिसमें स्थापत्य कला, चित्रकला, शिल्पकला और संगीत शामिल हैं। इस पेपर में हम जोधपुर के ऐतिहासिक महत्व के साथ-साथ कला की विविधता और उसकी सामाजिक-आर्थिक भूमिका पर भी ध्यान केंद्रित करेंगे। अनुसंधान की दिशा यह होगी कि किस प्रकार जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर, जैसे मेहरानगढ़ किला और उम्मेद भवन, न केवल स्थापत्य कला के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं, बल्कि कला के अन्य रूपों के माध्यम से शहर की सामाजिक और राजनीतिक पहचान को भी दर्शाते हैं। इसके अलावा, यह अध्ययन जोधपुर के लोक कला, जैसे हस्तशिल्प और पारंपरिक संगीत, के समकालीन संदर्भ में पुनरावलोकन करेगा, जिससे संस्कृति और कला की भूमिका को समझा जा सके।

0. ऐतिहासिक संदर्भ

जोधपुर की स्थापना 1459 ईस्वी में राठौड़ वंश के शासक राव जोधा ने की थी। राव जोधा ने मण्डोर की प्राचीन राजधानी को छोड़कर इस शहर की स्थापना की, क्योंकि मण्डोर का स्थान सामरिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं था। जोधपुर को शुरू में "मारवाड़" के नाम से जाना जाता था, जो बाद में राव जोधा के नाम पर जोधपुर के रूप में प्रसिद्ध हुआ। जोधपुर का ऐतिहासिक महत्व राठौड़ वंश के योगदान से गहरा जुड़ा हुआ है। राव जोधा और उनके उत्तराधिकारी शासकों ने इस क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण संरचनाएं और किले बनवाए, जिनमें प्रमुख मेहरानगढ़ किला है। यह किला राव जोधा द्वारा बनवाया गया था और आज भी जोधपुर का प्रतीक माना जाता है। राठौड़ शासकों ने जोधपुर को एक समृद्ध और सशक्त राज्य बनाने के लिए युद्ध और शासन कला में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने जोधपुर को व्यापार, संस्कृति और कला के केंद्र के रूप में स्थापित किया। इसके अलावा, उम्मेद भवन पैलेस जैसे भव्य महल और किले, जो जोधपुर की शाही धरोहर का हिस्सा हैं, शासकों की स्थापत्य कला और समृद्धि का प्रतीक हैं। जोधपुर के शासकों ने कला, संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाई, जिससे यह शहर भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

तालिका 1: जोधपुर के शासक: 1459 से 1947 तक के शासकों का विवरण

नाम	राज्य आरंभ	समाप्त
1. राव सिंहा (1237-1273)	राव जोधा - जोधपुर के संस्थापक और राठौड़ गौत्र के 15वें मुखिया।	12 मई 1459
2. राव सातल	अफ़ग़ान हमलावरों से 140 महिलाओं को बचाने में लगे घावों से मौत।	6 अप्रैल 1489

3. राव सुजा		मार्च 1492
4. राव बिरम सिंह – बघा के पुत्र		2 अक्टूबर 1515
5. राव गंगा – राणा सांगा के भारत के सुलतान में सहयोग		8 नवम्बर 1515
6. राव मालदेव – शेरशाह सूरी के आक्रमण को सफलतापूर्वक पीछे धकेला		9 मई 1532
7. राव चन्द्र सेन	मुगलों के साथ युद्ध में अपना अधिकतर क्षेत्र खो दिया	
8. राजा उदय सिंह मोटा राजा	एक जागीरदार के रूप में मुगलों ने 'राजा' पुनः स्थापित किया	4 अगस्त 1583
9. सवाई राजा सुरजमल		11 जुलाई 1595
10. महाराजा गज सिंह प्रथम	अपने आप से 'महाराजा' उपनाम लेने वाले प्रथम	7 सितम्बर 1619
11. महाराजा जसवंत सिंह – धर्मातपुर के युद्ध में औरंगजेब से लड़े।		6 मई 1638
12. राजा राय सिंह	राजा अमर सिंह के पुत्र	1659
13. महाराजा अजीत सिंह – औरंगजेब के साथ 25 वर्षों के युद्ध के बाद मारवाड़ के महाराजा बने। दुर्गादास राठौड़ ने इस युद्ध में मुख्य भूमिका निभाई।	19 फ़रवरी 1679	24 जून 1724
14. राजा इन्द्र सिंह	औरंगजेब द्वारा महाराजा अजीत सिंह के विरुद्ध घोषित किया गया लेकिन मारवाड़ में लोकप्रिय नहीं हुआ।	9 जून 1679
15. महाराजा अभय सिंह	सरबुलंद खान को हराकर छोटे समय के लिए पूरे गुजरात पर कब्जा किया।	24 जून 1724
16. महाराज राम सिंह	प्रथम राज्यकाल	18 जून 1749

17. महाराजा बख्त सिंह – एक महान योद्धा और जनरल, उन्होंने सारबुलंद खान के सामने मारवाड़ी सेना का नेतृत्व किया और उसे हराया। गंगवाना के युद्ध में उन्होंने मुगलों और कच्छवाहों की संयुक्त सेना को हराया।	जुलाई 1751	21 सितम्बर 1752
18. महाराजा विजय सिंह – प्रथम राज्यकाल	21 सितम्बर 1752	31 जनवरी 1753
19. महाराजा राम सिंह – दूसरा राज्यकाल	31 जनवरी 1753	सितम्बर 1772
20. महाराजा विजय सिंह – दूसरा राज्यकाल – महादजी सिंधिया से हारकर अजमेर नगर और दुर्ग को अभ्यर्पण करने को मजबूर हुये।	सितम्बर 1772	17 जुलाई 1793
21. महाराजा भीम सिंह	17 जुलाई 1793	19 अक्टूबर 1803
22. महाराजा मान सिंह	6 जनवरी 1818 को ब्रिटेन के साथ संधि की।	19 अक्टूबर 1803
23. महाराजा सर तख्त सिंह	अहमदनगर के पूर्व शासक, अजीत सिंह का वंशज।	4 सितम्बर 1843
24. महाराजा सर जसवंत सिंह द्वितीय	13 फ़रवरी 1873	11 अक्टूबर 1895
25. महाराजा सर सरदार सिंह – ब्रिटानी भारतीय सेना में कर्नल	11 अक्टूबर 1895	20 मार्च 1911
26. महाराजा सर सुमैर सिंह – ब्रिटानी भारतीय सेना में कर्नल	20 मार्च 1911	3 अक्टूबर 1918
27. महाराजा सर उमैद सिंह – ब्रिटानी भारतीय सेना में लेफ्टिनेन्ट-जनरल	3 अक्टूबर 1918	9 जून 1947

28. महाराजा हनवंत सिंह – मारवाड़ के शासक (जोधपुर)	9 जून 1947	15 अगस्त 1947
29. महाराजा गज सिंह द्वितीय – वर्तमान		

(जोधपुर, द्वारा प्रकाशित [एस.एल।], 1933)

2.1 राजपूताना साम्राज्य का प्रभाव

राजपूताना साम्राज्य का जोधपुर पर गहरा प्रभाव था, जो राठौड़ वंश के शासकों द्वारा स्थापित हुआ। राठौड़ शासकों ने 15वीं सदी में जोधपुर की नींव रखी और इसे एक शक्तिशाली राज्य के रूप में स्थापित किया। राव जोधा ने 1459 में जोधपुर शहर की स्थापना की और इस शहर को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक केंद्र के रूप में विकसित किया। राठौड़ शासकों के नेतृत्व में जोधपुर ने समृद्धि की ऊँचाइयाँ छुई और कला, साहित्य, स्थापत्य और सैन्य कला में योगदान दिया। राजपूत शासकों का सबसे बड़ा योगदान उनकी शानदार किलों और महलों के निर्माण में था। मेहरानगढ़ किला, जो जोधपुर का प्रतीक है, राठौड़ शासकों के अद्वितीय स्थापत्य कौशल का उदाहरण है। इस किले का निर्माण राव जोधा ने किया था और यह राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। इसके अलावा, उम्मेद भवन महल और जसवंत थड़ा जैसे अन्य महल भी राजपूत संस्कृति और उनकी कला का प्रतीक हैं। राजपूत शासकों का योगदान न केवल सैन्य और प्रशासनिक क्षेत्र में था, बल्कि उन्होंने सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहरों की भी महत्वपूर्ण रक्षा की। उनके द्वारा बनाए गए किले और महल आज भी भारतीय स्थापत्य कला और संस्कृति के अद्वितीय उदाहरण माने जाते हैं।

2.2 मुगल और मराठा प्रभाव

मुगल साम्राज्य का भारत के राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव था। 16वीं और 17वीं सदी में मुगलों ने भारत के अधिकांश हिस्से पर अपनी पकड़ बनाई, विशेष रूप से दक्कन क्षेत्र में, जहां उन्होंने विभिन्न राज्यों को नियंत्रित किया और अपनी सत्ता स्थापित की। मुगलों ने एक केंद्रीकृत प्रशासनिक प्रणाली बनाई, जिससे सम्राटों का शक्ति केंद्र दिल्ली में था। उन्होंने अपनी कला, वास्तुकला और संस्कृति को फैलाया, जिससे भारत की सांस्कृतिक धरोहर में महत्वपूर्ण योगदान हुआ।

हालाँकि, मुगलों का विस्तार मराठों के लिए एक चुनौती बन गया। मराठों ने स्वायत्तता के लिए संघर्ष किया और शिवाजी महाराज के नेतृत्व में एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। शिवाजी ने मुगलों के खिलाफ कई सफल युद्ध लड़े, जिनमें सूरत पर हमला और मुगलों के खिलाफ विद्रोह शामिल हैं। मराठों ने कई किलों और क्षेत्रों पर कब्जा किया, जिससे मुगलों को भारी नुकसान हुआ।

मुगल और मराठा संघर्षों ने भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव लाए, और मराठों ने अंततः मुगलों को अपनी सत्ता से चुनौती दी। मराठों का साम्राज्य 18वीं सदी में एक प्रमुख शक्ति बनकर उभरा, जबकि मुगलों की शक्ति धीरे-धीरे कमजोर होती गई।

2.3 स्मारकों का ऐतिहासिक महत्व

जोधपुर के ऐतिहासिक स्मारक न केवल राजपूत शाही विरासत के प्रतीक हैं, बल्कि भारतीय इतिहास और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा भी हैं। इनमें **मेहरानगढ़ किला**, **उम्मेद भवन पैलेस** और **जसवंत थड़ा** विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

मेहरानगढ़ किला, जो जोधपुर शहर के ऊपर स्थित है, राठौड़ शासकों द्वारा 15वीं शताब्दी में निर्मित किया गया था। यह किला भारतीय वास्तुकला का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है, जिसमें राजपूत और मुगल शैलियों का सम्मिलन है। किले की भव्य दीवारें, महल, मंदिर और संग्रहालय भारतीय सम्राटों की शक्ति, कला और संस्कृति का प्रमाण हैं। मेहरानगढ़ किला जोधपुर की ऐतिहासिक पहचान है, और यहां से शहर और आसपास के क्षेत्र का शानदार दृश्य देखा जा सकता है।

उम्मेद भवन पैलेस, जो जोधपुर के सबसे बड़े और भव्य महलों में से एक है, 20वीं शताब्दी की वास्तुकला का उदाहरण है। यह महल राठौड़ शासक महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा बनवाया गया था और इसकी वास्तुकला में इंडो-सरसेनिक और आर्ट डेको शैलियों का अद्भुत मिश्रण है। यह महल जोधपुर के शाही परिवार का निवास था और आज यह एक होटल और संग्रहालय के रूप में उपयोग किया जा रहा है, जो भारत की ऐतिहासिक समृद्धि को दर्शाता है।

जसवंत थड़ा, जिसे "मारवाड़ का ताजमहल" भी कहा जाता है, यह संगमरमर से बना एक सुंदर स्मारक है। यह महल महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में 1899 में उनके पुत्र महाराजा सरदार सिंह द्वारा बनवाया गया था। जसवंत थड़ा जोधपुर की शाही संस्कृति और विरासत का प्रतीक है, और यह एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में अपनी वास्तुकला और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है।

ये तीन स्मारक जोधपुर की शाही धरोहर को जीवित रखते हैं और पर्यटन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं, जो दर्शकों को भारतीय इतिहास और कला से जुड़ी गहरी समझ प्रदान करते हैं।

3. सांस्कृतिक मिश्रण

3.1 राजपूत और मुगल सांस्कृतिक मिश्रण

जोधपुर में राजपूत और मुगल संस्कृति का मिश्रण भारतीय वास्तुकला, कला और सांस्कृतिक जीवन में एक अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस मिश्रण की विशेषताएँ विशेष रूप से जोधपुर के प्रमुख स्मारकों और ऐतिहासिक स्थलों में देखने को मिलती हैं, जैसे **मेहरानगढ़ किला**, **जसवंत थड़ा**, और **उम्मेद भवन पैलेस**। इन स्मारकों में मुगल और राजपूत स्थापत्य कला की शैली और तकनीकों का सम्मिलन स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

राजपूतों की वास्तुकला में मजबूत किलों, महलों और मंदिरों का निर्माण हुआ, जबकि मुगल शैली में नक्काशीदार जालियाँ, गुंबद और बारीक विवरण शामिल हैं। **मेहरानगढ़ किला** में राजपूत स्थापत्य की सशक्त दीवारों और मुगल शैली के साज-सज्जा के तत्वों का अद्भुत मिश्रण देखा जा सकता है। वहीं, **जसवंत थड़ा** और **उम्मेद भवन** में मकराना संगमरमर का उपयोग और मुगल शैली के सुंदर गुंबद दर्शाते हैं।

यह सांस्कृतिक मिश्रण न केवल स्थापत्य कला में, बल्कि संगीत, कला और साहित्य में भी दिखता है, जहां राजपूत और मुगल तत्वों का संगम हुआ। जोधपुर में यह मिश्रण एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का रूप ले चुका है, जो भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

तालिका 1: राजपूत और मुगल सांस्कृतिक मिश्रण

विशेषता	राजपूत शैली	मुगल शैली	मिश्रण में विशेषताएँ
वास्तुकला	मजबूत किले, महल, मंदिर	नक्काशी, गुंबद, जालियाँ	राजपूत किलों में मुगल साज-सज्जा
सामग्री	बलुआ पत्थर, लकड़ी	संगमरमर, पत्थर	मकराना संगमरमर का उपयोग

सजावट	सरल, कठोरता, सामरिक विचार	बारीक नक्काशी, रंग-बिरंगे चित्र	दोनों शैलियों का सम्मिलन
-------	---------------------------	---------------------------------	--------------------------

इस प्रकार, जोधपुर में राजपूत और मुगल संस्कृति का मिलन न केवल स्थापत्य कला, बल्कि सांस्कृतिक जीवन के हर क्षेत्र में गहरी छाप छोड़ता है।

3.2 मारवाड़ी संस्कृति

मारवाड़ी संस्कृति राजस्थान की एक समृद्ध, जीवंत और ऐतिहासिक सांस्कृतिक परंपरा है, जो मुख्यतः **मारवाड़ क्षेत्र** में विकसित हुई। इस संस्कृति की पहचान उसकी **भाषा, पारंपरिक पहनावे, खानपान, संगीत, नृत्य, लोककला**, तथा सामाजिक मूल्यों से होती है। मारवाड़ी भाषा, जो राजस्थानी की एक प्रमुख उपभाषा है, इस समुदाय की आत्मा मानी जाती है। मारवाड़ी समाज में **परिवार और समाज का सामूहिक जीवन** अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। **व्यापारिक कुशलता, दूरदर्शिता**, और **सद्भावना** इस समाज की विशेषताएँ हैं, जिसने इस समुदाय को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रतिष्ठित किया है। पारंपरिक **त्योहारों** जैसे **गणगौर, तीज, दीपावली**, और **मारवाड़ उत्सव** में मारवाड़ी लोक जीवन की झलक स्पष्ट रूप से मिलती है।

इसके अलावा, **लोक संगीत (मांड), भजनों, और लोकनृत्य (गैर, कालबेलिया)** के माध्यम से मारवाड़ी संस्कृति में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। महिलाएं पारंपरिक घाघरा-ओढ़नी पहनती हैं, जबकि पुरुष साफा और धोती पहनते हैं जो उनकी सांस्कृतिक जड़ों को दर्शाते हैं।

मारवाड़ी समाज की विशेषता उसका **अतिथि-सत्कार, संस्कार**, और **सामाजिक सहयोग भावना** है। यह संस्कृति आज भी अपने मूल्यों और परंपराओं को जीवंत रखते हुए आधुनिकता के साथ संतुलन बनाए हुए है, जिससे यह भारतीय सांस्कृतिक विविधता का एक अमूल्य हिस्सा बन चुकी है।

3.3 स्थानीय त्योहार और परंपराएँ:

राजस्थान विशेषकर **जोधपुर और मारवाड़ क्षेत्र** की सांस्कृतिक पहचान में **स्थानीय त्योहारों और परंपराओं** की अहम भूमिका है। ये उत्सव न केवल सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं, बल्कि क्षेत्र की समृद्ध विरासत और सांस्कृतिक विविधता को भी जीवंत बनाए रखते हैं।

गंगौर त्योहार महिला केंद्रित पर्व है, जिसमें सुहागिन महिलाएं पारंपरिक वेशभूषा में ईश्वर शिव-पार्वती की पूजा कर सुख-समृद्धि की कामना करती हैं। **तीज** पर्व भी महिलाओं का प्रमुख उत्सव है, जिसमें लोकगीतों और झूलों की रचनात्मकता के साथ लोक जीवन की सुंदर झलक मिलती है।

मारवाड़ महोत्सव जोधपुर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला उत्सव है, जिसमें मारवाड़ी संस्कृति के सभी आयाम जैसे—लोकगीत, नृत्य, शिल्प, व्यंजन, पारंपरिक खेल और रीति-रिवाज प्रस्तुत किए जाते हैं। इस उत्सव का उद्देश्य नई पीढ़ी और पर्यटकों को मारवाड़ की सांस्कृतिक आत्मा से परिचित कराना है।

इसके अलावा **मकर संक्रांति**, **डोल ग्यारस**, **होली**, और **दीपावली** जैसे त्योहार भी सामाजिक मेल-जोल, पारिवारिक एकता और धार्मिक आस्था के प्रतीक हैं।

इन त्योहारों और परंपराओं के माध्यम से जोधपुर न केवल अपनी सांस्कृतिक पहचान को संजोता है, बल्कि उसे वैश्विक पटल पर भी गर्व से प्रस्तुत करता है।

3.4 सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयास

राजस्थान सरकार द्वारा सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, जिनमें **शेखावाटी की हवेलियों**, **प्राचीन स्मारकों**, और **हेरिटेज स्थलों** को केंद्र में रखा गया है। उपमुख्यमंत्री **दिया कुमारी** के नेतृत्व में आयोजित **द ग्रेट इंडियन ट्रेवल बाजार (GITB) 2025** जैसे आयोजनों से न केवल अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित किया जा रहा है, बल्कि सांस्कृतिक धरोहरों को वैश्विक मंच भी प्रदान किया जा रहा है। सरकार ने शेखावाटी क्षेत्र के **सीकर**, **झुंझुनूं** और **चूरू** में हवेलियों के **डिजिटल सर्वेक्षण** और संरक्षण की दिशा में नीतियाँ बनाना शुरू किया है। **रामगढ़** को एक **मॉडल हेरिटेज टाउन** के रूप में विकसित किया जा रहा है, ताकि वहां के अनुभवों को अन्य क्षेत्रों में दोहराया जा सके। साथ ही, स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित कर संरक्षण कार्यों को **रोजगार-सृजन** से भी जोड़ा जा रहा है।

गैर-सरकारी संगठनों और **हेरिटेज ट्रस्ट्स** द्वारा भी जीर्णोद्धार, दस्तावेजीकरण और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से ऐतिहासिक स्थलों को जीवंत रखा जा रहा है। इन सम्मिलित प्रयासों से राजस्थान न केवल पर्यटन का हब बन रहा है, बल्कि सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित भी कर रहा है।

4. कला की धरोहर

4.1 चित्रकला और शिल्पकला

जोधपुर, राजस्थान की सांस्कृतिक राजधानी, पारंपरिक चित्रकला और शिल्पकला का एक समृद्ध केंद्र है। यहाँ की "जोधपुर शैली" 18वीं शताब्दी में विकसित हुई, जो मोटी रेखाओं और लाल-पीले जैसे प्राथमिक रंगों के प्रयोग के लिए जानी जाती है। इस शैली में वेशभूषा पर मुगल प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, और खंजनपक्षी जैसे स्थानीय प्रतीकों का उपयोग इसकी विशिष्टता को दर्शाता है। पिचवाई चित्रकला, विशेष रूप से नाथद्वारा में विकसित, भगवान कृष्ण के जीवन की घटनाओं को सूक्ष्म और रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करती है। यह शैली धार्मिक भावनाओं और भक्ति रस से ओतप्रोत होती है। इसके अलावा, मिनीएचर आर्ट या लघु चित्रकला, जोधपुर सहित सम्पूर्ण राजस्थान में प्रचलित रही है, जिसमें धार्मिक कथाएँ और पौराणिक प्रसंगों को अत्यंत सूक्ष्मता से रंगों और बारीक रेखाओं के द्वारा दर्शाया जाता है।

जोधपुर की चित्रकला पर अजंता शैली का भी प्रभाव है, जो चित्रों में गहराई और भावनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ाता है। इन सभी शैलियों का अध्ययन भारतीय चित्रकला के विकास में जोधपुर की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करता है।

4.2 जोधपुरी ब्लू पॉटरी

जोधपुरी ब्लू पॉटरी का इतिहास और विकास राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसका नाम "ब्लू पॉटरी" उस आकर्षक नीले रंग से आया है, जो इन बर्तनों पर इस्तेमाल किया जाता है। हालांकि यह पॉटरी पारंपरिक मिट्टी से नहीं, बल्कि क्वार्ट्ज और अन्य खनिजों से बनाई जाती है। यह कला रूप भारत में तुर्की और मंगोल कलाकारों द्वारा 14वीं शताब्दी में विकसित किया गया था और फिर चीनियों द्वारा इसे अपनाया गया। बाद में, फारसी वास्तुकला और कला से प्रभावित होकर यह मध्य एशिया के विभिन्न हिस्सों में फैल गई।

जब मुगल साम्राज्य भारत में आया, तो उन्होंने इस कला को भारतीय भूमि पर लाकर वास्तुकला में इस्तेमाल किया। 17वीं शताब्दी में, ब्लू पॉटरी को जयपुर के कारीगरों ने अपनाया, और यहाँ से जोधपुर में इसका प्रसार हुआ। जोधपुरी ब्लू पॉटरी ने अपनी विशिष्टता और रंग-बिरंगे डिज़ाइन के लिए पहचान बनाई। यह पॉटरी अब घरेलू उपयोग से लेकर सजावटी वस्तुओं तक विभिन्न रूपों में पाई जाती है। जोधपुर के कारीगर आज भी इस पारंपरिक कला को जीवित रखे हुए हैं, और यह स्थानीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

बॉक्स प्रिंटिंग

बॉक्स प्रिंटिंग, जिसे ब्लॉक प्रिंटिंग भी कहा जाता है, जोधपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में एक प्रमुख हस्तशिल्प कला है। यह कला 16वीं शताब्दी के आसपास राजस्थान में प्रचलित हुई, विशेषकर मेवाड़ और

मारवाड़ क्षेत्रों में। जोधपुर में यह कला मुख्य रूप से कपड़ों और अन्य वस्तुओं पर सटीक और जटिल डिज़ाइनों को प्रिंट करने के लिए इस्तेमाल होती है। इस कला में लकड़ी के ब्लॉक्स का उपयोग किया जाता है, जिन पर विभिन्न पैटर्न और डिज़ाइन उकेरे जाते हैं। इन ब्लॉक्स को रंगों में डुबोकर, कपड़े पर दबाया जाता है, जिससे सुंदर प्रिंट तैयार होते हैं।

इस कला के विकास में जोधपुर के स्थानीय कारीगरों का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। 19वीं और 20वीं शताब्दी में, जोधपुर के आसपास के इलाकों में, जैसे कि पाली और बठिंडा, बॉक्स प्रिंटिंग के कला रूप को नया मोड़ दिया गया। इन क्षेत्रों में पारंपरिक डिज़ाइनों को अधिक आधुनिक रूप में ढालते हुए, बॉक्स प्रिंटिंग की कला ने अपनी पहचान बनाई। आजकल, जोधपुरी बॉक्स प्रिंटिंग की प्रसिद्धि वैश्विक स्तर पर है, और यह भारतीय हस्तशिल्प के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में उभर कर सामने आई है।

संगीत और नृत्य

राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर में संगीत और नृत्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जो राज्य की विविधता और समृद्ध इतिहास को दर्शाती है। जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में संगीत और नृत्य की परंपराएं न केवल सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा हैं, बल्कि इनका सामाजिक और धार्मिक महत्व भी है। यहां की लोकप्रिय संगीत शैलियों और नृत्य रूपों में "कच्ची घोड़ी" और "कालबेलिया" जैसे प्रमुख नृत्य शामिल हैं, जो राज्य के लोक जीवन और उसकी सांस्कृतिक धारा को जीवित रखते हैं।

कच्ची घोड़ी एक पारंपरिक राजस्थानी नृत्य है, जो मुख्य रूप से राजस्थानी लोक संगीत के साथ किया जाता है। यह नृत्य खासतौर पर विवाह और अन्य धार्मिक अवसरों पर किया जाता है। इसमें नर्तकियों द्वारा कच्ची घोड़ी (एक प्रकार की पारंपरिक घोड़ी) पर चढ़कर प्रदर्शन किया जाता है, जो राजस्थान के वीरता और युद्ध कौशल की प्रतीक है। यह नृत्य घोड़ी की सवारी की तरह होता है, और इसमें कच्ची घोड़ी पर बैठकर नर्तक मस्ती और उत्साह के साथ विभिन्न शारीरिक मुद्राओं को प्रस्तुत करते हैं। यह नृत्य जोधपुर के ग्रामीण इलाकों में बहुत प्रचलित है और राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कालबेलिया राजस्थान का एक और प्रसिद्ध लोक नृत्य है, जो विशेष रूप से राजस्थान के कालबेलिया जनजाति द्वारा किया जाता है। यह नृत्य पारंपरिक लोक गीतों के साथ किया जाता है, और इसमें नर्तक महिलाएं विशेष प्रकार के वस्त्र पहनकर अपने शरीर को लचकाकर लयबद्ध तरीके से नृत्य करती हैं। कालबेलिया नृत्य की खासियत इसकी तेज गति और विविध शारीरिक मुद्राओं में है, जो सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को दर्शाती है। यह नृत्य विशेष रूप से जोधपुर के आसपास के क्षेत्रों में लोकप्रिय है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी इसे पहचान मिली है। 2010 में इस नृत्य को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त हुई।

इन दोनों नृत्य शैलियों के माध्यम से राजस्थान की लोक कला और संगीत की जीवंतता प्रदर्शित होती है। ये नृत्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि राज्य के पारंपरिक और सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा भी हैं। जोधपुर में होने वाले प्रमुख सांस्कृतिक आयोजनों और उत्सवों में इन नृत्य शैलियों का प्रदर्शन राज्य की सांस्कृतिक विविधता को दर्शाता है।

आधुनिक कला और युवा कलाकार

जोधपुर, राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर के साथ-साथ समकालीन कला और युवा कलाकारों के लिए एक उभरता हुआ केंद्र बन चुका है। जोधपुर में आधुनिक कला की दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव आ रहे हैं, जहां युवा कलाकार पारंपरिक कला रूपों को नई दृष्टि और तकनीकी पहलुओं से जोड़कर आधुनिक कला के क्षेत्र में अपने विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।

जोधपुर के समकालीन कलाकार पारंपरिक कला शैलियों जैसे पिचवाई, ब्लू पॉटरी, और मिनीएचर आर्ट को न केवल संरक्षित कर रहे हैं, बल्कि इन्हें नयापन देने के लिए आधुनिक तकनीकों और शहरी विचारधाराओं का भी समावेश कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, जोधपुर में कई आर्ट गैलरी और कला प्रदर्शनी आयोजित होती हैं, जहां युवा कलाकार अपनी कला को वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित कर रहे हैं।

स्थानीय कलाकारों के प्रयासों से जोधपुर ने कला की दुनिया में अपनी पहचान बनाई है। इन कलाकारों ने अपनी कृतियों में न केवल राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान किया है, बल्कि उन्होंने वैश्विक कला मंच पर भी अपनी स्थिति मजबूत की है। जोधपुर में कला शिक्षा के नए केंद्र भी बन रहे हैं, जो आगामी कलाकारों के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन प्रदान कर रहे हैं।

5. स्थापत्य कला

जोधपुर का मेहरानगढ़ किला न केवल राजस्थान के सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक किलों में से एक है, बल्कि यह अपनी वास्तुकला की भव्यता, ऐतिहासिक महत्ता और सांस्कृतिक धरोहर के कारण जोधपुर का गौरव है। यह किला जोधपुर शहर के ऊपर 410 फीट ऊंची एक पहाड़ी पर स्थित है, और इसका निर्माण राव जोधा ने 1459 में शुरू करवाया था। मेहरानगढ़ किला जोधपुर शहर का संस्थापक राव जोधा द्वारा अपनी राजधानी को सुरक्षित रखने के लिए बनवाया गया था। किले की वास्तुकला में राजपूत स्थापत्य कला की अद्वितीय विशेषताएँ हैं, जो इसे ऐतिहासिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाती हैं।

5.2 किले की वास्तुकला

मेहरानगढ़ किला अपनी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है, जो 15वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी के अंत तक विभिन्न शासकों द्वारा लगातार सुधारी और विस्तारित की गई थी। किले का निर्माण विभिन्न स्थापत्य शैलियों

का सम्मिलन है, जिसमें राजपूत, मुगल और अन्य प्रभावों का मिश्रण देखने को मिलता है। किले में सात मुख्य द्वार हैं, जिनमें से प्रत्येक द्वार विभिन्न शासकों के समय में बनाई गई थी। इन द्वारों का उद्देश्य किले की सुरक्षा बढ़ाना था, और वे बीकानेर और जयपुर सेनाओं पर किले के शासकों द्वारा की गई विजय को दर्शाते हैं। किले की दीवारों की ऊंचाई 120 फीट तक जाती है, जो किले की विशालता और सुरक्षा को दर्शाता है। किले में प्रवेश के लिए विभिन्न द्वारों के साथ-साथ किले के भीतर कई महल, मंदिर, हवेलियाँ और अन्य संरचनाएँ भी हैं, जो राजपूत काल की शाही जीवन शैली और संस्कृति को दर्शाती हैं। किले में स्थित चोखेलाव बाग, जिसे 1739 में महाराजा अभय सिंह द्वारा बनवाया गया था, किले के सबसे खूबसूरत हिस्सों में से एक है। किले का संग्रहालय भी काफी प्रसिद्ध है, जिसमें शाही वस्त्र, शस्त्रागार, चित्रकला, संगीत वाद्ययंत्र और अन्य शाही कलाकृतियाँ संग्रहित हैं।

5.3 ऐतिहासिक महत्ता

मेहरानगढ़ किला जोधपुर के इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस किले ने विभिन्न युद्धों और आक्रमणों का सामना किया और कभी भी दुश्मनों के हाथ नहीं आया। राव जोधा ने इस किले की नींव रखी और इसे मजबूत बनाने के लिए कई सुधार किए। किले के भीतर सात द्वारों का निर्माण विभिन्न शासकों द्वारा उनकी विजय के प्रतीक के रूप में किया गया था। किले के भीतर महल, मंदिर और अन्य संरचनाओं में जोधपुर के इतिहास और संस्कृति की झलक मिलती है। किले का मुख्य उद्देश्य राज्य की सुरक्षा था, और यह समय के साथ जोधपुर के शाही परिवार का प्रमुख निवास स्थल बन गया।

5.4 सांस्कृतिक महत्ता

मेहरानगढ़ किला न केवल एक ऐतिहासिक स्थल है, बल्कि यह जोधपुर और राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर का भी प्रतीक है। किले के भीतर के विभिन्न महल, मंदिर और बगीचे राजपूत संस्कृति, कला और शाही जीवन शैली की अद्वितीय मिसालें हैं। किले में स्थित मेहरानगढ़ संग्रहालय में जोधपुर के शाही परिवार से संबंधित विभिन्न वस्तुएं प्रदर्शित की जाती हैं, जैसे कि शाही वस्त्र, चित्रकला, वाद्ययंत्र और अन्य सांस्कृतिक कलाएँ। किले के भीतर के स्थानों में दीवारों की सजावट, चित्रकला और स्थापत्य कला से यह स्थान जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करता है।

5.5 उम्मेद भवन पैलेस

उम्मेद भवन पैलेस जोधपुर का एक और प्रसिद्ध स्थल है, जो अपने वास्तुशिल्प और सांस्कृतिक योगदान के लिए प्रसिद्ध है। इसका निर्माण 1929 में महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा किया गया था और यह एक शानदार महल है जो 20वीं शताब्दी के वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। उम्मेद भवन का डिज़ाइन आर्किटेक्ट हेनरी वॉघन लैन्चेस्टर ने तैयार किया था, और इसे इंडो-सारासेनिक शैली में बनाया गया था। यह महल सफेद संगमरमर

से निर्मित है और इसमें अत्यधिक सजावटी डिजाइन, भव्य दीवारों, और विशाल उद्यान हैं। उम्मेद भवन का निर्माण अकाल राहत योजना के तहत किया गया था और यह राजस्थान के सबसे बड़े निजी निवासों में से एक है। वर्तमान में, उम्मेद भवन एक लक्ज़री होटल के रूप में कार्य करता है, जो पर्यटकों को राजस्थान की शाही जीवन शैली का अनुभव कराता है।

5.6 जसवंत थड़ा

जसवंत थड़ा, जो जोधपुर का एक अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक है, महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में 1906 में बनाया गया था। यह स्मारक सफेद संगमरमर से निर्मित है और इसकी वास्तुकला में राजपूत और मुगल प्रभावों का अद्वितीय मिश्रण देखा जाता है। यह स्मारक जोधपुर के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह जोधपुर के शाही परिवार की संस्कृति और इतिहास को प्रदर्शित करता है। जसवंत थड़ा के पास एक छोटी सी झील भी है, जो इस स्मारक की सुंदरता में और वृद्धि करती है।

5.7 प्रसिद्ध मंदिरों और हवेलियों का स्थापत्य

जोधपुर के प्रमुख मंदिरों और हवेलियों की वास्तुकला भी राजस्थान के स्थापत्य कला का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन मंदिरों और हवेलियों में राजपूत शैली की जटिल सजावट, सुंदर दीवार चित्रण और स्थापत्य की नाजुकता देखने को मिलती है। जोधपुर के मंदिरों में कृष्ण मंदिर, चामुंडा माता मंदिर, और महल मंदिर प्रमुख हैं, जिनकी वास्तुकला राजपूत शाही जीवन और संस्कृति का महत्वपूर्ण प्रतिनिधित्व करती है। हवेलियाँ, जैसे कि उम्मेद भवन, मंडोर की हवेली और जोधपुर की अन्य ऐतिहासिक हवेलियाँ, जोधपुर के समृद्ध सांस्कृतिक और वास्तुकला धरोहर का प्रतीक हैं।

मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस, जसवंत थड़ा और जोधपुर के मंदिर और हवेलियाँ, जोधपुर और राजस्थान की स्थापत्य कला, ऐतिहासिक महत्ता और सांस्कृतिक धरोहर को समर्पित हैं। इन संरचनाओं के माध्यम से राजस्थान के शाही जीवन, कला और संस्कृति का अद्वितीय उदाहरण देखने को मिलता है। इन ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा न केवल जोधपुर के इतिहास और संस्कृति को जानने का एक अवसर प्रदान करती है, बल्कि यह राजस्थान की वास्तुकला की भव्यता और सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित करती है।

6. साहित्य और लोककथा

राजस्थानी साहित्य और लोककथाएँ राजस्थान की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जोधपुर और इसके आसपास के क्षेत्रों ने राजस्थानी साहित्य में गहरी छाप छोड़ी है, जिसमें लोककथाओं, वीर गाथाओं और मारवाड़ी भाषा का विशेष योगदान है।

6.1 राजस्थानी साहित्य

राजस्थानी साहित्य का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक है, खासकर जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में। राजस्थानी साहित्य में मुख्यतः हिंदी, गुजराती और अन्य भारतीय भाषाओं का मिश्रण देखा जाता है। जोधपुर, जो पहले मारवाड़ रियासत का हिस्सा था, ने साहित्य की विभिन्न शैलियों को अपनाया और उनका विकास किया। यहाँ के प्रमुख साहित्यकारों ने इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और सामाजिक विरासत को अपनी रचनाओं में समाहित किया।

राजस्थानी कविता और गद्य लेखन में वीरता, धर्म, भक्ति और प्रकृति के विषयों का प्रमुख स्थान रहा है। रचनाकारों ने विशेष रूप से राजपूतों की वीर गाथाओं को अपनी कविताओं और कहानियों में उकेरा। पं. रामनिवास व्यास, जसवंत सिंह राठौड़ और रघुनाथजी शास्त्री जैसे साहित्यकारों ने राजस्थानी साहित्य में योगदान किया, जिनकी काव्य रचनाएँ राजस्थान की वीरता, धर्म और संस्कृति को प्रकट करती हैं। विशेषकर "बापूजी की गाथाएँ" और "पढारी ठाकुर की कहानी" जैसी काव्य रचनाएँ जोधपुर के राजपूतों की वीरता को जीवंत करती हैं।

6.2 लोककथाएँ और कहानियाँ

लोककथाएँ और राजपूतों की वीर गाथाएँ राजस्थान की संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं। जोधपुर की लोककथाओं में जहाँ एक ओर वीरता की गाथाएँ हैं, वहीं दूसरी ओर प्रेम, त्याग और बलिदान की कहानियाँ भी शामिल हैं। जोधपुर में राजपूतों की वीर गाथाएँ बहुत प्रचलित हैं, जो न केवल युद्धों की जीत-हार को दर्शाती हैं, बल्कि सामाजिक नैतिकता, सम्मान और राजपूतों की शौर्य भावना को भी उजागर करती हैं।

"महाराणा प्रताप की गाथाएँ" और "रामसिंह की वीरता" जैसी कथाएँ जोधपुर के काव्य साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं। इन गाथाओं में राजपूतों के संघर्ष, उनकी युद्ध नीतियाँ, और उनकी वीरता को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है। "कालूजी की वीर गाथा" और "भीमसिंह की कथा" जैसी लोककथाएँ जोधपुर में आज भी सुनाई जाती हैं, जो प्राचीन राजपूत संस्कृति और युद्ध रणनीतियों को उजागर करती हैं।

इसके अलावा, जोधपुर में कई किवंदतियाँ भी प्रचलित हैं जो धार्मिक स्थानों, किलों, महलों और ऐतिहासिक घटनाओं से जुड़ी हुई हैं। इनमें "मेहरानगढ़ किले की कथा" और "उम्मेद भवन का रहस्य" जैसी लोककथाएँ शामिल हैं, जो ऐतिहासिक घटनाओं को किवंदतियों के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

6.3 मारवाड़ी भाषा का महत्व

मारवाड़ी भाषा, जो राजस्थानी भाषा के अंतर्गत आती है, का साहित्यिक योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। जोधपुर और मारवाड़ क्षेत्र में मारवाड़ी भाषा का प्रचलन बहुत पुराना है और इसे राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान के रूप में देखा जाता है। मारवाड़ी भाषा न केवल एक बोली है, बल्कि इसमें गहरी साहित्यिक धारा भी विकसित हुई है। मारवाड़ी साहित्य में कविताएँ, गद्य रचनाएँ, लोकगीत, भजनों और साहित्यिक संवादों का समावेश है, जो मारवाड़ी समाज की जीवनशैली और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाते हैं।

मारवाड़ी भाषा का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक योगदान उसके लोक गीतों और भजनों में देखा जा सकता है। इन गीतों में ग्रामीण जीवन, प्रेम, त्योहारों, और राजस्थानी संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया जाता है। राजस्थान की संस्कृति और परंपराओं को लोक गीतों और कहानियों के माध्यम से संजोने का काम मारवाड़ी साहित्य ने किया है। विशेषकर "पिचवाई", "राजस्थानी भजन" और "लोककाव्य" की शैलियाँ मारवाड़ी साहित्य की पहचान बन चुकी हैं।

मारवाड़ी साहित्य के प्रमुख कवियों और लेखकों में जसवंत सिंह राठौड़, रघुनाथजी शास्त्री, और भैरुजी शंकर जी जैसे नाम आते हैं, जिन्होंने मारवाड़ी साहित्य में ऐतिहासिक और सांस्कृतिक योगदान दिया। मारवाड़ी भाषा में लेखन और संवाद शैली ने न केवल जोधपुर बल्कि पूरे राजस्थान की साहित्यिक धारा को प्रोत्साहित किया। इसके अलावा, मारवाड़ी साहित्य में धार्मिकता और भक्ति का भी महत्वपूर्ण स्थान है, खासकर संत कवि सूरदास, तुलसीदास और मीरा बाई के भक्ति गीतों का मारवाड़ी संस्करण बहुत लोकप्रिय हुआ है।

जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में राजस्थानी साहित्य, लोककथाएँ और मारवाड़ी भाषा का सांस्कृतिक योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इन सभी साहित्यिक और सांस्कृतिक रूपों ने राजस्थान के शाही इतिहास, वीरता, प्रेम और संस्कृति को एक समृद्ध रूप में प्रस्तुत किया है। जोधपुर के साहित्यकारों और लोककथाकारों ने जोधपुर की शौर्य गाथाओं और राजपूत संस्कृति को अपनी रचनाओं के माध्यम से संरक्षित किया है। साथ ही, मारवाड़ी भाषा ने राजस्थान की संस्कृति को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने में अहम भूमिका निभाई है। इस प्रकार, जोधपुर का साहित्य और लोककथा समृद्ध विरासत का प्रतीक बनकर आज भी जीवित है।

7. पर्यटन का प्रभाव

1. पर्यटन का बढ़ता प्रभाव

जोधपुर, जिसे 'ब्लू सिटी' के नाम से भी जाना जाता है, में पर्यटन के बढ़ते प्रभाव ने कला, संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। ऐतिहासिक धरोहरों, जैसे कि मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन पैलेस, और जसवंत थड़ा, के कारण जोधपुर में पर्यटन आकर्षण लगातार बढ़ रहा है। यह बढ़ता हुआ पर्यटन न केवल शहर की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखता है, बल्कि कला और हस्तशिल्प को भी प्रोत्साहित करता है।

जोधपुर में बढ़ते पर्यटकों की संख्या ने स्थानीय कला रूपों, जैसे कि पेंटिंग, शिल्पकला, कशीदाकारी, और जोधपुरी ब्लू पॉटरी को एक नई पहचान दी है। इन कला रूपों को अधिक मंच मिले हैं और स्थानीय कारीगरों के लिए वैश्विक बाजार भी खुल गए हैं। इसके अलावा, जोधपुर की लोक कला, जैसे की "कालबेलिया" नृत्य और "कच्छी घोड़ी" नृत्य, ने भी पर्यटकों के बीच अपनी पहचान बनाई है।

2. सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा

पर्यटन ने न केवल जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर को नई पहचान दी है, बल्कि इसके संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पर्यटन विभाग और सरकार द्वारा कई योजनाएँ और परियोजनाएँ शुरू की गई हैं, ताकि ऐतिहासिक स्थलों और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित किया जा सके। उदाहरण के लिए, मेहरानगढ़ किले और उम्मेद भवन पैलेस जैसे स्थल UNESCO द्वारा विश्व धरोहर के रूप में मान्यता प्राप्त हैं, और इनके संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाए गए हैं।

इसके अलावा, जोधपुर के आसपास के ऐतिहासिक किलों और महलों के संरक्षण के लिए स्थानीय समुदाय और कारीगरों को शामिल किया गया है। जैसे जसवंत थड़ा का निर्माण सफेद संगमरमर से किया गया था, और आज भी इसे स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाए रखा जाता है। पर्यटन के माध्यम से, इन स्थलों की देखरेख और पुनर्निर्माण कार्यों में वित्तीय मदद मिलती है, जिससे धरोहर संरक्षित रहती है।

3. सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

पर्यटन ने जोधपुर की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में भी उल्लेखनीय बदलाव किए हैं। आर्थिक दृष्टि से, पर्यटन उद्योग ने शहर में रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। होटल, रेस्टोरेंट, ट्रांसपोर्ट, गाइड, शिल्पकला, और स्थानीय हस्तशिल्प उद्योग में बड़े पैमाने पर रोजगार की स्थिति उत्पन्न हुई है। जोधपुर के स्थानीय कारीगरों, जैसे कि ब्लू पॉटरी के कारीगर, लोक कलाकार, और सिलाई कारीगर, को वैश्विक बाजारों से मांग मिलने लगी है, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

इसके अलावा, जोधपुर के लोगों में एक सांस्कृतिक जागरूकता भी आई है। पहले, जोधपुर के कुछ पुराने इलाकों में रह रहे लोग अपनी सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं से अधिक जुड़ने लगे हैं। वे पारंपरिक कला रूपों और लोक कथाओं को जीवित रखने के प्रयास कर रहे हैं। वहीं, सामाजिक दृष्टिकोण से, जोधपुर में पर्यटन ने अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है, जिससे न केवल स्थानीय संस्कृति को वैश्विक पहचान मिली है, बल्कि यहां के निवासियों के जीवन दृष्टिकोण में भी बदलाव आया है।

आर्थिक दृष्टि से, जोधपुर में पर्यटन से सरकारी राजस्व में भी वृद्धि हुई है। पर्यटन शुल्क, प्रवेश शुल्क, होटल टैक्स और अन्य पर्यटन संबंधित शुल्कों से जोधपुर सरकार को आय होती है, जिसका उपयोग शहर के विकास और संरक्षण में किया जाता है।

कुल मिलाकर, जोधपुर में पर्यटन के बढ़ते प्रभाव ने कला, संस्कृति, और इतिहास के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा और सामाजिक-आर्थिक लाभ पर्यटन के प्रमुख परिणाम रहे हैं। हालांकि, इसके साथ-साथ, यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि पर्यटन की बढ़ती संख्या से स्थानीय जीवनशैली, पारंपरिक कला रूपों और सांस्कृतिक धरोहर पर कोई नकारात्मक प्रभाव न पड़े। पर्यटन के

लिए एक संतुलित दृष्टिकोण आवश्यक है, ताकि यह न केवल जोधपुर की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित करे, बल्कि स्थानीय समुदायों के लिए स्थिर रोजगार और आर्थिक अवसर भी उत्पन्न करे।

8. समकालीन सांस्कृतिक परिदृश्य

1. आधुनिक कला और संस्कृति

जोधपुर में समकालीन कला का परिदृश्य निरंतर विकसित हो रहा है, और यह शहर पारंपरिक और आधुनिक कला के मिलाजुले रूपों का केंद्र बनता जा रहा है। जोधपुर के समकालीन कलाकार न केवल राजस्थानी सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए काम कर रहे हैं, बल्कि उन्हें एक नया स्वरूप भी दे रहे हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर कला की एक नई पहचान बन रही है।

समकालीन कला में जोधपुर के कलाकारों ने मूर्तिकला, चित्रकला, और डिजिटल कला में नई तकनीकों का इस्तेमाल करना शुरू किया है। विशेष रूप से युवा कलाकार अपनी कृतियों में नए प्रयोग करते हैं, जिससे जोधपुर को भारतीय कला परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है। शहर के कई गैलरी और कला केंद्र, जैसे कि "अमर कला केंद्र" और "आर्टिस्ट्स गैलरी", जोधपुर के समकालीन कला आंदोलन का हिस्सा बन चुके हैं। यहाँ के कलाकार पारंपरिक कला रूपों को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं, और यह कला के शौकीन लोगों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है। इसके अलावा, यहाँ पर रचनात्मकता और कल्पना के नए क्षेत्र खोले गए हैं, जिससे स्थानीय कलाकारों को अपनी पहचान बनाने का अवसर मिला है।

2. सांस्कृतिक कार्यशालाएँ और महोत्सव

जोधपुर में कला कार्यशालाएँ, संगीत महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की एक लंबी परंपरा है, जो इस शहर को एक सांस्कृतिक गंतव्य के रूप में प्रस्तुत करती है। यहाँ पर आयोजित होने वाले प्रमुख महोत्सवों में "मारवाड़ महोत्सव" और "जोधपुर रेत महोत्सव" शामिल हैं, जो न केवल स्थानीय कला और संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकारों और पर्यटकों को भी आकर्षित करते हैं। मारवाड़ महोत्सव जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने और प्रचारित करने का एक महत्वपूर्ण मंच है, जहाँ पारंपरिक लोक संगीत, नृत्य, और कला रूपों का प्रदर्शन होता है। इन कार्यक्रमों में भारत और विदेशों से आने वाले कलाकार अपने हुनर का प्रदर्शन करते हैं। इसके अतिरिक्त, जोधपुर में कला कार्यशालाएँ भी नियमित रूप से आयोजित होती हैं, जहाँ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकार और क्यूरेटर अपने अनुभव साझा करते हैं, जिससे स्थानीय कला दृश्य को एक नई दिशा मिलती है।

3. नवीनतम सांस्कृतिक रुझान

जोधपुर के युवा कलाकार और सांस्कृतिक नेता नए-नए पहल करते हुए समकालीन सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दे रहे हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल कला के माध्यम से इन कलाकारों ने अपनी कला को वैश्विक

मंच पर पहुँचाया है। यहाँ के कलाकार न केवल पारंपरिक कला रूपों को पुनर्जीवित कर रहे हैं, बल्कि इनका समकालीन रूपांतरण भी कर रहे हैं। युवा चित्रकार, मूर्तिकार और शिल्पकला कलाकार स्थानीय कला को वैश्विक दर्शकों के बीच प्रस्तुत करने के लिए कला प्रदर्शनी और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

इसके अलावा, जोधपुर में नए सांस्कृतिक रुझान भी सामने आए हैं। विभिन्न युवा कलाकारों ने पारंपरिक कारीगरी को मॉडर्न तकनीकों के साथ मिलाकर नए रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे कि ब्लू पॉटरी को आधुनिक डिज़ाइनों के साथ पुनः प्रस्तुत करना, या फिर लोक संगीत को समकालीन धुनों के साथ जोड़कर उसे एक नया जीवन देना। इस प्रकार, जोधपुर में कला के विभिन्न रूपों का समागम हो रहा है, जिससे एक नई सांस्कृतिक दिशा मिल रही है।

साथ ही, जोधपुर में सशक्त महिला कलाकारों की संख्या भी बढ़ रही है, जो अपने रचनात्मक कार्यों के माध्यम से सांस्कृतिक बदलाव ला रही हैं। वे पारंपरिक कृतियों को आधुनिक दृष्टिकोण से चित्रित करती हैं और समाज में जागरूकता फैलाने के लिए कला का उपयोग करती हैं।

कुल मिलाकर, जोधपुर में समकालीन कला और संस्कृति एक नई दिशा में बढ़ रही है। यहाँ के कलाकार अपने पारंपरिक कला रूपों को आधुनिक तकनीकों और विचारधाराओं से जोड़कर एक नया सांस्कृतिक परिदृश्य बना रहे हैं। सांस्कृतिक महोत्सव और कार्यशालाएँ न केवल स्थानीय कलाकारों को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करती हैं, बल्कि पर्यटन को भी बढ़ावा देती हैं। युवा कलाकारों की पहल और नवीनतम सांस्कृतिक रुझान जोधपुर को भारतीय कला की एक प्रमुख नगरी बना रहे हैं, और इस शहर का सांस्कृतिक परिदृश्य भविष्य में और भी अधिक समृद्ध होने की संभावना रखता है।

9. निष्कर्ष

जोधपुर, राजस्थान का एक प्रमुख सांस्कृतिक और ऐतिहासिक केंद्र है, जहाँ कला, संस्कृति और इतिहास का अद्वितीय संगम देखने को मिलता है। जोधपुर के ऐतिहासिक किले, महल, मंदिर और हवेलियाँ न केवल इसकी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक हैं, बल्कि यह शहर कला और वास्तुकला के विभिन्न रूपों के संरक्षण में भी एक अग्रणी स्थान रखता है। मेहरानगढ़ किला, उम्मेद भवन, जसवंत थड़ा और अन्य सांस्कृतिक स्थल जोधपुर को एक वैश्विक सांस्कृतिक हब के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यहाँ के पारंपरिक कला रूप, जैसे पिचवाई चित्रकला, ब्लू पॉटरी और राजस्थानी मिनिअर आर्ट, जोधपुर के सांस्कृतिक इतिहास को जीवित रखने के साथ-साथ यह कला रूप वैश्विक स्तर पर पहचान बना रहे हैं। जोधपुर में लोक संगीत और नृत्य शैलियाँ, जैसे "कच्छी घोड़ी" और "कालबेलिया", भी यहाँ की जीवंत सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा हैं, जो न केवल स्थानीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को भी आकर्षित करती हैं।

जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों में सांस्कृतिक धरोहर स्थलों के संरक्षण, पारंपरिक कला रूपों को बढ़ावा देने के साथ-साथ

इनसे जुड़े सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य को बनाए रखना शामिल है। राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कला कार्यशालाएँ और महोत्सव, जैसे "मारवाड़ महोत्सव", और "जोधपुर रेत महोत्सव", सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के साथ-साथ इन्हें वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करने का महत्वपूर्ण मंच प्रदान करते हैं। जोधपुर के ऐतिहासिक किलों, महलों और मंदिरों के पुनर्निर्माण और संरक्षण के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इन्हें देख सकें और इन्हें संजो कर रख सकें।

जोधपुर की कला, संस्कृति और इतिहास से संबंधित भविष्य के अध्ययन की संभावनाएँ काफी व्यापक हैं। एक ओर जहाँ जोधपुर की सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की दिशा में कार्य हो रहा है, वहीं दूसरी ओर, इन परंपराओं और कला रूपों का समकालीन संदर्भ में विश्लेषण करने की आवश्यकता है। भविष्य के अनुसंधान में यह महत्वपूर्ण होगा कि कैसे जोधपुर की पारंपरिक कला और सांस्कृतिक पहचान को आधुनिक कला और वैश्विक सांस्कृतिक प्रवृत्तियों के साथ जोड़ा जा सकता है। इसके अलावा, जोधपुर के सांस्कृतिक प्रभाव और इसकी कारीगरी के विकास पर भी अध्ययन किए जा सकते हैं, जो विभिन्न वैश्विक सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित हुए हैं।

जोधपुर के लोक संगीत, नृत्य और शिल्पकला पर अनुसंधान के क्षेत्र में भी नए रास्ते खोले जा सकते हैं, विशेष रूप से उन पहलुओं पर जो इन कला रूपों की वैश्विक पहचान को बढ़ावा देने में सहायक हो सकते हैं। साथ ही, जोधपुर के कला और संस्कृति के विकास में युवाओं और समकालीन कलाकारों की भूमिका पर भी अधिक गहराई से अध्ययन किया जा सकता है, जिससे इस क्षेत्र में उभरते हुए रुझानों और भविष्य की दिशा का बेहतर समझ प्राप्त किया जा सके।

जोधपुर, अपनी सांस्कृतिक धरोहर, कला, और इतिहास के माध्यम से न केवल राजस्थान बल्कि भारत की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहाँ की वास्तुकला, कला, संगीत और नृत्य की विशेषताएँ इस शहर को एक अनूठा सांस्कृतिक परिदृश्य प्रदान करती हैं। भविष्य में जोधपुर की कला और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर गहरे अध्ययन और अनुसंधान से इस क्षेत्र को एक और नई दिशा मिल सकती है, और इसकी सांस्कृतिक धरोहर को दुनिया भर में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो सकता है।

संदर्भ

1. "Jodhpur.nic.in"। 19 फरवरी 2012 को मूल से संग्रहित। 3 जून 2015 को प्राप्त।
2. "जोधपुर राज्य सैन्य प्रणाली: संरचना और स्वरूप (1453 से 1818)", महेश कुमार दम्या, ISSN: 2456-5474, RNI No.UPBIL/2016/68367, Vol.-5, Issue-11, दिसंबर 2020, पेपर सबमिशन: 15/12/2020, स्वीकृति की तिथि: 26/12/2020, प्रकाशन की तिथि: 27/12/2020।
3. "जोधपुर जिला जनगणना 2011 हैंडबुक: गाँव और शहर के अनुसार प्राथमिक जनगणना सारांश (PCA)" (PDF)। Censusofindia.gov.in। पृष्ठ 33। 28 अप्रैल 2016 को मूल (PDF) से संग्रहित। 19 अप्रैल 2016 को प्राप्त।

4. "मेहरानगढ़ किले का इतिहास और घूमने की जानकारी - Holidayrider.Com (in अमेरिकी अंग्रेजी). 2019-03-31.
5. "राठौड़ राजाओं का समाधि स्थल जसवंत थड़ा"। 12 अप्रैल 2017 को मूल से संग्रहित। 5 मई 2017 को प्राप्त।
6. गुप्ता, शोभना (2003)। भारत के स्मारक (अंग्रेजी में)। हार-आनंद पब्लिकेशंस। ISBN 9788124109267। 14 जुलाई 2018 को मूल से संग्रहित। 14 जुलाई 2018 को प्राप्त।
7. चानण मल एवं लोकेश जैन, "भारतीय दृश्य कला का समकालीन परिदृश्य एवं प्रयोगवादी प्रवृत्तियाँ," मुख्यपृष्ठ, रविवार, दिसंबर 15, 2024
8. चौधरी, डॉ. महेन्द्र। "राजस्थान में मीनाकारी कला: एक ऐतिहासिक परिपेक्ष्य"। JETIR, फरवरी 2017, खंड 4, अंक 2, पृष्ठ: 1-8। ई-ISSN: 2349-5162, www.jetir.org।
9. जोधपुर, द्वारा प्रकाशित [एस.एल।], 1933.
10. माया कंवर, "जोधपुर: नगरीय विकास के आयाम - एक ऐतिहासिक विश्लेषण", इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च (IJFMR), E-ISSN: 2582-2160, Volume 6, Issue 2, March-April 2024. पेपर सबमिशन: 15/12/2020, स्वीकृति तिथि: 26/12/2020, प्रकाशन तिथि: 27/12/2020
11. मारवाड़ के तहत जसवंत सिंह, (1658-1678): जोधपुर hukumat की bahiद्वारा, सतीश चन्द्र, रघुबीर सिंह, घनश्याम दत्त शर्मा. द्वारा प्रकाशित मीनाक्षी प्रकाशन, 1976.
12. राजस्थान पत्रिका। "पहाड़ियों के आंचल में शानदार पर्यटन जसवंत थड़ा"। 5 मई 2017 को प्राप्त।
13. शासन जोधपुर के राज्य, 1800-1947 A. D.द्वारा, निर्मला एम. उपाध्याय. अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों, 1973.
14. स्वामी, डॉ. प्रेम. "राठौड़ सत्ता का आगमन एवं उत्थान: मारवाड़ के विशेष संदर्भ में" ऑनलाइन (जनवरी 2024).